International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 04(II), October - December, 2024, pp. 210-213

गोगाजी चौहान और पांच खोपड़ी– एक अध्ययन

सुनील कुमार*
डॉ. अमित चामोली**

सार

राजस्थान अपनी लोक कला एवं संस्कृति हेतु पूरे विश्व में सिरमौर है। यहां पर अनेक लोक देवी देवताओं की पूजा व्यापक तौर पर होती है। इन्हीं में वीर गोगाजी चौहान मुख्य रूप से पूजे जाते हैं।

" पाबू हड्बु रामदे,मांगलिया मेहा
पांचों पीर पधार जो,गोगाजी जेहा"

उक्त पंक्ति से स्पष्ट है कि गोगाजी चौहान भी राजस्थान के इतिहास में प्रसिद्ध लोक देवता का स्थान रखते हैं। वीर गोगाजी चौहान की अनेक लोक कथाएं आमजन में सिर्फ मौखिक रूप से ही उपलब्ध है तथा उनके मंदिरों में भक्तों और पुजारियों द्वारा ही सुनाई जाती है। इन्हीं में से एक कथा पांच खोपड़ी के चमत्कार की आती है। यह पांच खोपड़ी पांच बावरी भाइयों के कटे हुए सिर हैं, जिन्होंने गोगा जी के आशीर्वाद से 17 वीं शताब्दी में चमत्कार दिखाए एवं प्रसिद्धि प्राप्त की है। इसी कथा को एक अध्ययन के रूप में संकलित किया गया है।

शब्दकोशः *किशोरावस्था प्रौढ़ समस्या, समायोजन, विचलित।*

गोगाजी का जीवन परिचय

गोगाजी चौहान का जन्म विक्रम संवत 1003 (946 ईस्वी) में राजस्थान के चुरू जिले के ददरेवा गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम जेवर सिंह था तथा माता का नाम बाछल देवी था। ऐसी मान्यता है कि गोगा जी का जन्म नाथ संप्रदाय के महान गुरु गोरखनाथ जी के आशीर्वाद से 946 ईस्वी में भाद्रपद कृष्ण नवमी को हुआ था।

लोक कथा – गोगा जी और पांच खोपड़ी का चमत्कार और सुमो तेलन को आशीर्वाद।

यह कथा राजस्थान और हरियाणा के जनस्थानों पर अति विख्यात है परंतु अभी तक शुद्ध साहित्य संकलन देखने को बिरला ही मिलता है। यह कथा पांच बावरी भाईयों की कहानी है जो राजस्थान के शाही राजघराने से थे। उन्होंने एक गरीब तेली का कार्य करने वाली महिला को अपने चमत्कार से अमीर बना दिया था। इससे पहले अपनी धर्म बहिन की रक्षा हेतु मुगलों के साथ युद्ध करते हुए अपनी कुर्बानी दी थी।

---

* शोधार्थी, इतिहास विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** सहायक प्रोफेसर, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

यह पांच बावरी भाई थे जो सनातन धर्म में लोक देवता का स्थान रखते हैं। इन्हें पंच पीर के नाम से भी जाना जाता है इनका जन्म राजस्थान में राजपूत बावरी समाज के राजा हेमराज व पत्नी कपूरी देवी के घर हुआ था। राजा हेमराज राजस्थान के खड़खड़ी गांव के राजा थे इनको कोई संतान नहीं थी राजा हेमराज ने संतान प्राप्ति के लिए इस्माइल जोगी (नाथ संप्रदाय के मुस्लिम सिद्ध) की सेवा करके पुत्र प्राप्ति का वरदान मांगा। (कुछ साक्ष्यों के अनुसार गुरु गोरखनाथ जी से वरदान मांगा था)। अतः संभावित है इस्माइल जोगी ने राजा को वरदान देने हेतु गुरु गोरखनाथ की आराधना की। इसी कारण इन पांचो भाइयों का जन्म गोरखनाथ जी के आशीर्वाद से माना जाता है। इस्माइल जोगी प्रसन्न होकर उन्हें दो पुत्रों का वरदान इस शर्त पर दिया कि दोनों में से एक बड़े बेटे को उनके धुणें (आराधना स्थल) को सौंपना होगा। राजा हेमराज ने शर्त को स्वीकार करली। कुछ समय पश्चात उनकी पत्नी गर्भवती हुई और उनके दो जुड़वा पुत्र हुए इनमें से एक कुछ समय बड़ा था। राजा हेमराज ने अपने बड़े पुत्र का नाम हरि सिंह बावरी रखा ओर छोटे पुत्र का नाम शेर सिंह बावरी रखा। शर्त के मुताबिक राजा हेमराज को अपना बड़ा पुत्र हरि सिंह को धुणें को सौंपना था परंतु विवशता के कारण उन्होंने अपने छोटे पुत्र शेर सिंह बावरी को धुणें को सौंप दिया। इस बात पर कपूरी देवी बहुत दुखी हुई और विलाप करने लगी। कपूरी देवी का विलाप देखकर इस्माइल जोगी ने शेर सिंह को धुणें में से बाहर निकाला और कपूरी देवी को वापस सौंपते हुए कहा कि धुणें में जाने के कारण शेर सिंह का रंग काला पड़ गया है परंतु अब धुणें की अपार शक्ति शेर सिंह में आ गई है। अब यह एक शक्तिशाली व सबल इंसान बन गया है। अतः उसका नाम बदलकर सबल सिंह बावरी कर दिया गया। परंतु कपूरी देवी अब भी पूर्णतया खुश नहीं थी इसलिए इस्माइल जोगी ने कपूरी देवी को तीन पुत्र और एक पुत्री का वरदान ओर दे दिया। इस वरदान के फलस्वरुप कपूरी देवी ने केसरमल बावरी, जीतमल बावरी और नथमल बावरी नामक तीन पुत्र और शेढो नामक एक पुत्री को जन्म दिया। यह सभी भाई–बहन अत्यंत शक्तिशाली व गुणवान थे। पांचों भाई गुरु गोरखनाथ को ही गुरु मानते थे तथा गोगा जी को भी अपना अराध्य देवता मानते थे। यह नाथ संप्रदाय के प्रति स्वामी भक्ति रखते थे। इन्होंने 52 वीर और 56 कलवे की शक्ति प्राप्त की थी और काली माता की पूजा से 64 योगिनी शक्ति प्राप्त की थी। इन पांचों भाइयों की दो धर्म बहिने भी थी उनका नाम नथिया व श्याम कौर था।

निवास स्थान व प्रसिद्ध स्थल

- **राजस्थान–** खरखडी गांव (बीकानेर रियासत)
- **हरियाणा–** मुरथल गांव, सोनीपत और सफिदो, जिंद (हरियाणा) (मुख्य समाधि स्थल)
- **दिल्ली–** चादंनी चौक – नीली छतरी मंदिर।

प्रस्तुत कथा के मुख्य पात्र

मुगलों से पाँच बावरियों का युद्ध –

सन् 1632 की यह घटना मध्यकालीन भारतीय इतिहास की है जब दिल्ली पर मुगलों का राज था। उस समय दिल्ली का शासक शाहजहाँ था तथा इसका एक मुगल पठान सूबेदार था जो यमुना के पास चक बेंगलूरु का सूबेदार था। उसका नाम नवरंग शाह था। नवरंग शाह बहुत ही क्रूर और अय्यास व्यक्ति था। वह अपने इलाके की लड़कियों और औरतों को जबरदस्ती उठा ले जाता था ओर उनका शोषण किया करता था। इसी प्रकार एक बार उसकी नजर एक ब्राह्मण हिंदू लड़की श्याम कौर पर पडी। उसने श्याम कौर की डोली अपने सिपाहियों द्वारा

उठवाकर अपने महल में मंगवा ली और श्याम कौर को कैद कर दिया। उसे इस्लाम कबूल कर उससे निकाह करने का प्रस्ताव रखा। श्याम कौर ने सभी प्रस्ताव ठुकरा दिए ओर कहा कि मुझे छोड दो वरना मेरे हिन्दू भाई तुमको खत्म कर मुझे जरूर ले जायेंगें। तो इस पर नवरंग शाह उसे छह महीने का समय देता है कि अगर छह महीने तक उसे छुडवाने तक कोई नहीं आया तो वह उसे जबरदस्ती इस्लाम धर्म धारण करवाकर उससे विवाह कर लेगा।

श्याम कौर नवरंग शाह की बाकी दासियों सहित रोजाना यमुना में पानी लेने आती थी ओर एक परवाना (चिट्ठी) लिखकर यमुना में बहा दिया करती थी। जिस पर श्याम कौर का संदेश लिखा होता था – मैं श्याम कौर एक ब्राह्मण हिंदू लड़की हूँ नवरंग शाह ने मुझे जबरदस्ती कैद कर रखा है ओर छह महीने का समय दिया है कि इस्लाम ग्रहण करके उससे विवाह करूँ। अगर कोई हिंदू भाई मेरी प्राण रक्षा करता है तो उसका बहुत उपकार होगा। वरना बादशाह मेरा धर्म नष्ट–भ्रष्ट कर देगा। इस प्रकार रोजाना वह एक परवाना लिखकर यमुना में बहा दिया करती।

इधर खरखड़ी गांव में अकाल पडने से पांचों भाई अपनी माता व बहिन सहित यमुना किनारे जाकर रहने लग गए। एक दिन ये सभी यमुना के किनारे पानी पीने आए हुए थे उन्होंने उस परवाने का तैरते हुए देखा तो उसे बाहर निकाल कर पढा। सभी भाइयों ने अपने सैनिकों सहित मुगल सिपाहियों पर हमला कर दिया ओर उन्हें मारकर नवरंग शाह की कैद से श्याम कौर को छुड़ाकर अपने गांव खरखड़ी ले आये ओर उसे धर्मबहिन बना लिया। जब नवरंग शाह को इस बात का पता चला तो उसने गांव खरखड़ी पर चढ़ाई कर दी। पांचों भाइयों ने वीरतापूर्वक युद्ध किया और नवरंग शाह को भी मौत के घाट उतार दिया। जब इस बात का पता मुगल बादशाह शाहजहाँ को चला तो उसने अन्य सेनापतियों सहित बार बार मुगल अभियान शुरू कर दिए। पांचों भाई लड़ते लड़ते हरियाणा के मुरथल नामक स्थान पर पहुंचे जब उनके सैनिक व हथियार नहीं बचे तब मुगलों की सेना से युद्ध करना बहुत मुश्किल हुआ। तभी वे मुरथल गांव के एक नागा साधु के पास गए ओर अपनी सारी बातें बताई। नागा साधु ने सभी भाइयों को गुरु गोरखनाथ और गोगाजी चौहान द्वारा दी हुई शक्ति को याद दिलाया ओर कहा कि जब भी तुम धर्म रक्षार्थ लड़ाई करोगे तो ये तुम्हारा साथ देंगे। नागा साधु ने कहा कि अब तुम्हारे पास सेना ओर हथियार नहीं है ओर मुगल तुम्हारी माताओं बहनों का धर्म नष्ट कर सकते हैं इसलिए उनकी रक्षा हेतु तुम उनके सिर और अपने सिर उतार दो ओर फिर युद्ध करो। नागा साधु ने बावरियों को कलवे (एक तांत्रिक शिक्षा) दी उसके बाद उन्होंने अपनी माता और बहिनों के सिर तलवार से उतार दिए। इसके बाद अपने सिर भी उतार लिए। ये 5 खोपड़ी मुरथल नामक गांव(हरियाणा) के जंगल में पड़ी रही ओर इनके धड़ मुगल सेना से लड़ते हुए भयंकर तबाही मचाते हुए 80 किलोमीटर दूर सफिदो गांव (जींद –हरियाणा) तक पहुँच गए। इन सभी बिना सिर वाले धड़ को लड़ते हुए अस्तबली पीर ने देखा तो वह भी भौंचके रह गए। पीर को इनकी शक्ति का आभास हुआ तो पानी का छींटा देकर पांचों भाइयों के धड़ को शांत कर दिया ओर सभी के धड़ वहाँ पर गिर गए आज भी सफीदो गांव में इनका समाधि स्थल बना हुआ है। इस प्रकार से धर्म रक्षार्थ लड़ाई करते हुए बावरी भाई शहीद हुए।

सुमो तेलन को गरीब से अमीर बनाना –

एक गांव में एक महिला रहती थी उसका नाम सूमो माई था। वह अत्यंत गरीब महिला थी। वह अपने कोल्हू से तेल निकालने का कार्य करती थी इसलिए सभी उसे सुमो तेलन कहकर पुकारते थे। सुमो तेलन बेहद गरीब थी उसके पति की मृत्यु काफी समय पहले ही हो गई थी। अब वह अकेली रहती थी किसी प्रकार से अपने बैलों द्वारा कोल्हू चलाकर तेल निकालकर उससे गुजर बसर करती थी परन्तु एक बार अकाल पड़ा तब उसके दोनों बैल भी मर गए। अब तो मानो उस पर दुखों का पहाड़ सा टूट पड़ा।उसकी रोजीरोटी कोल्हू के काम से ही चल रही थी अब वह भी छिन गई। उसने घर चलाने के लिए गांव में कई जगह से उधार भी लिया। अब दुकान वाला बणिया भी सामान देने से मना करने लगा क्योंकि उससे पहले का उधार भी चुकता नहीं हुआ था।

एक दिन एक नागा साधु सूमों के घर भिक्षा मांगने आया। वह महिला रोने लगी ओर अपनी आपबीती उस योगी सिद्ध को सुनायी तथा अपने आप को गरीबी से बचाने का उपाय पूछने लगी। तब योगी सिद्ध ने उसकी विनती सुन कर ध्यान लगाकर उसको एक उपाय बताया। नागा योगी ने कहा की माई आज तुम आरण्यक (गोबर के उपले, लकड़ी ईंधन) चुगने के लिए गांव से बाहर बाईं बिंद के ढाके (मुरथल गांव का जंगल) में जाओ। आज तुम्हारे भाग्य का उदय होने वाला

है। यह कहकर योगी चले गए। तब वह महिला जंगल में आरण्य चुगने हेतु जाती है। वह गोबर के उपले लकड़ी ईंधन आदि कचरा चुन रही थी तभी उसकी नजर पांच खोपड़ी पर पड़ी जो कि जिंदा सिर थे वह बात कर सकते थे। सूमो देखकर घबरा गई जब वह जानने लगी तो उनमे से एक ने कहा की माई हमें भी अपने साथ अपने घर ले चलो हम तुम्हारी सहायता करेंगे। सुमो उन्हें अपनी टोकरी में रखकर घर ले आई ओर उनके कहे अनुसार आसन पर उन्हें विराजमान कर उनकी प्रार्थना की। तब बावरी भाइयों ने अपनी कहानी इस शर्त पर सुनाई कि वह उनका यह रहस्य किसी ओर को कभी नहीं बतायेगी। ओर कहा की गोगाजी के आशीर्वाद से हम आपकी सभी मनोकामना पूर्ण करेंगे। उन्होंने सुमो को सवा किलो सरसों लाने के लिए कहा परन्तु सुमो ने कहा कि अब उसे उधार नहीं मिलता है तब उन्होंने अपने चमत्कार से सवा किलो सरसों की पोटली वहीं प्रकट करी ओर कहा कि अब अपने कोल्हू को शुरू करें। सुमो मन में शंका लिये वह सरसों अपने कोल्हू में डालती रही और उससे लगातार तेल निकलता रहा। अगले 12 वर्षों तक लगातार सूमो का कोल्हू उतनी ही सरसों और बिना बैल के ही चलता रहा देखते ही देखते वह अमीर बन गई। वह नित्य पांचों खोपड़ियों की पूजा करती और उनके कहे अनुसार कार्य करती। अब सूमो के गरीबी के दिन गए। जहाँ उसका टूटा मकान हुआ करता था वहाँ अच्छी कोठी बन गई और बहुत सुंदर स्थान बन गया।

गोगाजी द्वारा पांचो सिर धङ से जोङना –

बावरी भाई के सिर सूमो तेलन के घर पर 12 वर्ष तक रहे। परन्तु एक बार गांव वालों ने सूमो पर दबाव बनाया ओर उसका राज जानना चाहा की इतनी सरसों और इतना तेल और बिना बेल के कोल्हू कैसे चलता है। इस गरीब से अमीर बनने का राज पूछा सुमो ने लोक लाज से डरते हुए गांव के मुखिया के सामने सारी कहानी सुना डाली तब से सभी की आस्था बावरी भाइयों के प्रति हो गई। परन्तु अब बावरी भाई सूमो का घर छोड़कर जाने लगे क्योंकि शर्त के विरूध उसने वह रहस्य सबको बता दिया था। तब सुमो ने उनसे प्रार्थना की कि वह भी आपके साथ ही चलेगी ओर आपकी भक्ति ही करना चाहती है। तब बावरियों ने उसे भी अरण्य के अंदर वापस लाकर सूमो का भी उद्धार किया तथा स्वयं ने वीर गोगाजी की आराधना कर उन्हें प्रसन्न किया। गोगा जी ने खुश होकर पांच भाइयों को वरदान दिया ओर उनके सिर उनके धड़ वहीं मंगवाकर जोड़ दिया। अब बावरी भाई पुनः पूर्ण शरीर युक्त सशक्त योद्धा बन गए। तब गोगाजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया की आज के बाद तुम्हारे साथ सुमो की पूजा भी होगी ओर तुम सब की पूजा मेरे साथ की जाएगी ओर तुम बावरी भाई जग का कल्याण करते रहोगे।

इस प्रकार नाथ संप्रदाय के गुरु गोरखनाथ और वीर गोगाजी चौहान के आशीर्वाद से पांच खोपड़ी का उद्धार किया गया। तब से पांच बावरी भाइयों की पूजा अर्चना उनके समाधि स्थल पर होती है ओर यह पांच पीर के नाम से प्रसिद्ध है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. अभिलेख पांच बावरी मंदिर धाम–मूरथल, सोनीपत (हरियाणा)
2. अभिलेख जय बाबा नागेवाला द्वार मंदिर– मूरथल
3. अभिलेख पांच बावरी धाम मंदिर– सफिदो,जिंद (हरियाणा)
4. अभिलेख अस्तबली पीर मजार – सफिदो,जिंद (हरियाणा)
5. भेंटवार्ता– पुस्तेनी पुजारी– मूरथल धाम मंदिर
6. भेंटवार्ता– महंत योगी – सफिदो धाम मंदिर
7. भेंटवार्ता– भगत महावीर सिंह जी– दो जांटी गोगाजी धाम, चाहुवाली (हनुमानगढ)
8. भेंटवार्ता– भगत महावीर जी – गोगामेङी, 8।ळ (हनुमानगढ)
9. भेंटवार्ता– नाथ सिद्ध – गोगामेङी, हनुमानगढ
10. भेंटवार्ता– विनोद स्वामी (राजस्थानी भाषा साहित्यकार) परलीका, हनुमानगढ
11. भेंटवार्ता– रामस्वरूप किसान (राजस्थानी भाषा साहित्यकार) परलीका, हनुमानगढ।

❖◆❖